

1 Thessalonians

1 Greetings from Paul, Silas, and Timothy. To the church of those in Thessalonica, who are in God the Father and the Lord Jesus Christ. Grace and peace be yours.

The Life and Faith of the Thessalonians

²We always remember you when we pray, and we thank God for all of you. ³Every time we pray to God our Father we thank him for all that you have done because of your faith. And we thank him for the work you have done because of your love. And we thank him that you continue to be strong because of your hope in our Lord Jesus Christ.

⁴Brothers and sisters, God loves you. And we know that he has chosen you to be his people. ⁵When we brought the Good News to you, we came with more than words. We brought that Good News with power, with the Holy Spirit, and with the sure knowledge that it was true. Also you know how we lived when we were with you. We lived that way to help you. ⁶And you became like us and like the Lord. You suffered much, but still you accepted the teaching with joy. The Holy Spirit gave you that joy.

⁷You became an example to all the believers in Macedonia and Achaia. ⁸The Lord's teaching has spread from you throughout Greece and beyond. In fact, your faith in God has become known everywhere, so we never have to tell anyone about it. ⁹People everywhere are already telling the story about the good way you accepted us when we were there with you. They tell about how you stopped worshiping idols and changed to serve the living and true God. ¹⁰And you began waiting for God's Son to come from heaven—the Son God raised from death. He is Jesus, who saves us from God's angry judgment that is coming.

1 थिस्सलुनीकियों

1 थिस्सलुनीकियों के परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में स्थित कलीसिया को पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से: परमेश्वर का अनुग्रह और शांति तुम्हारे साथ रहे।

थिस्सलुनीकियों का जीवन और विश्वास

²हम तुम सब के लिए सदा परमेश्वर को धन्यवाद देते रहते हैं और अपनी प्रार्थनाओं में हमें तुम्हारी याद बनी रहती है। ³प्रार्थना करते हुए हम सदा तुम्हारे उस काम की याद करते हैं जो फल है, विश्वास का, प्रेम से पैदा हुए तुम्हारे कठिन परिश्रम का, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा से उत्पन्न तुम्हारी धैर्यपूर्ण सहनशीलता का हमें सदा ध्यान बना रहता है।

⁴परमेश्वर के प्रिय हमारे भाईयों, हम जानते हैं कि तुम उसके चुने हुए हो। ⁵क्योंकि हमारे सुसमाचार का विवरण तुम्हारे पास मात्र शब्दों में ही नहीं पहुँचा है बल्कि पवित्र आत्मा सामर्थ्य और गहन श्रद्धा के साथ पहुँचा है। तुम जानते हो कि हम जब तुम्हारे साथ थे, तुम्हारे लाभ के लिए कैसा जीवन जीते थे। ⁶कठोर यातनाओं के बीच तुमने पवित्र आत्मा से मिलने वाली प्रसन्नता के साथ सुसंदेश को ग्रहण किया और हमारा तथा प्रभु का अनुकरण करने लगे।

⁷इसलिए मकिदुनिया और अखाया के सभी विश्वासियों के लिये तुम एक आदर्श बन गये ⁸क्योंकि तुमसे प्रभु के संदेश की जो गूँज उठी, वह न केवल मकिदुनिया और अखाया में सुनी गयी बल्कि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास सब कहीं जाना माना गया। सो हमें कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। ⁹⁻¹⁰क्योंकि वे स्वयं ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुमने हमारा कैसा स्वागत किया था और सजीव तथा सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिए और स्वर्ग से उसके पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा करने के लिए तुम मृतियों की ओर से सजीव परमेश्वर की ओर कैसे मुड़े थे। पुत्र अर्थात् यीशु को उसने मरे हुआँ में से फिर से जिला उठाया था और वही परमेश्वर के आने वाले कोप से हमारी रक्षा करता है।

Paul's Work in Thessalonica

2 Brothers and sisters, you know that our visit to you was not a failure. ² Before we came to you, people in Philippi abused us with insults and made us suffer. You know all about that. And then, when we came to you, many people there caused trouble for us. But our God gave us the courage we needed to tell you his Good News. ³ When we encourage people to believe the Good News, it's not out of wrong motives. We are not trying to trick or fool anyone. ⁴ No, we did it because God is the one who gave us this work. And this was only after he tested us and saw that we could be trusted to do it. So when we speak, we are only trying to please God, not anyone else. He is the one who can see what is in our hearts.

⁵ You know that we never tried to influence you by saying nice things about you. We were not trying to get your money. We had no greed to hide from you. God knows that this is true. ⁶ We were not looking for praise from people—not from you or anyone else.

⁷ When we were with you, as apostles of Christ we could have used our authority to make you help us. But we were very gentle* with you. We were like a mother caring for her little children. ⁸ We loved you very much, so we were happy to share God's Good News with you. But not only that—we were also happy to share even our own lives with you. ⁹ Brothers and sisters, I know that you remember how hard we worked. We worked night and day to support ourselves, so that we would not be a burden to anyone while we did the work of telling you God's Good News.

¹⁰ When we were there with you believers, we were pure, honest, and without fault in the way we lived. You know, just as God does, that this is true. ¹¹ You know that we treated each one of you the way a father treats his own children. ¹² We encouraged you, we comforted you, and we told you to live good lives

थिस्सलुनीका में पौलुस का कार्य

2 हे भाईयों, तुम्हारे पास हमारे आने के सम्बन्ध में तुम स्वयं ही जानते हो कि वह निरर्थक नहीं था। ² तुम जानते हो कि फिलिप्पी में यातनाएँ झेलने और दुर्व्यवहार सहने के बाद भी परमेश्वर की सहायता से हमें कड़े विरोध के रहते हुए भी परमेश्वर के सुसमाचार को सुनाने का साहस प्राप्त हुआ। ³ निश्चय ही हम जब लोगों का ध्यान अपने उपदेशों की ओर खींचना चाहते हैं तो वह इसलिए नहीं कि हम कोई भटके हुए हैं। और न ही इसलिए कि हमारे उद्देश्य दूषित हैं और इसलिए भी नहीं कि हम लोगों को छलने का जतन करते हैं। ⁴ हम लोगों को खुश करने की कोशिश नहीं करते बल्कि हम तो उस परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं जो हमारे मन का भेद जानता है।

⁵ निश्चय ही हम कभी भी चापलूसी की बातों के साथ तुम्हारे सामने नहीं आये। जैसा कि तुम जानते ही हो, हमारा उपदेश किसी लोभ का बहाना नहीं है। परमेश्वर साक्षी है ⁶ हमने लोगों से कोई मान सम्मान भी नहीं चाहा। न तुमसे और न ही किसी और से।

⁷ यद्यपि हम मसीह के प्रेरितों के रूप में अपना अधिकार जता सकते थे किन्तु हम तुम्हारे बीच वैसे ही नम्रता के साथ रहे* जैसे एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला कर उसका पालन-पोषण करती है। ⁸ हमने तुम्हारे प्रति वैसी ही नम्रता का अनुभव किया है, इसलिए परमेश्वर से मिले सुसमाचार को ही नहीं, बल्कि स्वयं अपने आपको भी हम तुम्हारे साथ बाँट लेना चाहते हैं क्योंकि तुम हमारे प्रिय हो गये हो। ⁹ हे भाईयों, तुम हमारे कठोर परिश्रम और कठिनाई को याद रखो जो हम ने दिन-रात इसलिए किया है ताकि हम परमेश्वर के सुसमाचार को सुनाते हुए तुम पर बोझ न बनें।

¹⁰ तुम साक्षी हो और परमेश्वर भी साक्षी है कि तुम विश्वासियों के प्रति हमने कितनी आस्था, धार्मिकता और दोष रहितता के साथ व्यवहार किया है। ¹¹ तुम जानते ही हो कि जैसे एक पिता अपने बच्चों के साथ व्यवहार करता है ¹² वैसे ही हमने तुममें से हर एक को आग्रह के साथ सुख चैन दिया है। और उस रीति से जाने को कहा है

2:7 But ... gentle Several Greek copies have "But we became babies."

2:7 किन्तु ... रहे कुछ यूनानी प्रतियों में है: "किन्तु तुम्हारे बीच हम बच्चे ही बने रहे है।"

for God. He calls you to be part of his glorious kingdom.

¹³ Also, we always thank God because of the way you accepted his message. You heard it and accepted it as God's message, not our own. And it really is God's message. And it works in you who believe. ¹⁴ Brothers and sisters, you are just like God's churches in Judea. I mean that you were treated badly by your own people, just as those believers in Christ Jesus were treated badly by other Jews—¹⁵ the same Jews who killed the Lord Jesus and the prophets. And they forced us to leave their country. They are not pleasing to God, and they are against everyone else. ¹⁶ And they are trying to stop us from teaching those who are not Jews. They don't want them to be saved. But they are just adding more and more sins to the ones they already have. Now the time has come for them to suffer God's anger.

Paul's Desire to Visit Them Again

¹⁷ Brothers and sisters, we were separated from you for a short time. But even though we were not there, our thoughts were still with you. We wanted very much to see you, and we tried very hard to do this. ¹⁸ Yes, we wanted to come to you. I, Paul, tried more than once to come, but Satan stopped us. ¹⁹ You are our hope, our joy, and the crown we will be proud of when our Lord Jesus Christ comes. ²⁰ You bring us honor and joy.

3¹⁻² We could not come to you, but it was very hard to wait any longer. So we decided to send Timothy to you and stay in Athens alone. Timothy is our brother. He works with us for God to tell people the Good News about Christ. We sent Timothy to strengthen and encourage you in your faith. ³ We sent him so that none of you would be upset by the troubles we have now. You yourselves know that we must have these troubles. ⁴ Even when we were with you, we told you that we would all have to suffer. And you know that it happened just as we said. ⁵ This is why I sent Timothy to you, so that I could

जिससे परमेश्वर, जिसने तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुला भेजा है, प्रसन्न होता है।

¹³ और इसलिए हम परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते रहते हैं क्योंकि हमसे तुमने जब परमेश्वर का वचन ग्रहण किया तो उसे मानवीय सन्देश के रूप में नहीं बल्कि परमेश्वर के सन्देश के रूप में ग्रहण किया, जैसा कि वह वास्तव में है। और तुम विश्वासियों पर जिसका प्रभाव भी है। ¹⁴ हे भाईयों, तुम यहूदियों में स्थित मसीह यीशु में परमेश्वर की कलीसियाओं का अनुसरण करते रहे हो। तुमने अपने साथी देश-भाईयों से वैसी ही यातनाएँ झेली हैं जैसी उन्होंने उन यहूदियों के हाथों झेली थीं। ¹⁵ जिन्होंने प्रभु यीशु को मार डाला और नबियों को बाहर खदेड़ दिया। वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते वे तो समूची मानवता के विरोधी हैं।

¹⁶ वे विधर्मियों को सुसमाचार का उपदेश देने में बाधा खड़ी करते हैं कि कहीं उन लोगों का उद्धार न हो जाये। इन बातों में वे सदा अपने पापों का घड़ा भरते रहते हैं और अन्ततः अब तो परमेश्वर का प्रकोप उन पर पूरी तरह से आ पड़ा है।

फिर मिलने की इच्छा

¹⁷ हे भाईयों, जहाँ तक हमारी बात है, हम थोड़े समय के लिये तुमसे बिछुड़ गये थे। विचारों से नहीं, केवल शरीर से। सो हम तुमसे मिलने को बहुत उतावले हो उठे। हमारी इच्छा तीव्र हो उठी थी। ¹⁸ हाँ! हम तुमसे मिलने के लिए बहुत जतन कर रहे थे। मुझ पौलुस ने अनेक बार प्रयत्न किया किन्तु शैतान ने उसमें बाधा डाली। ¹⁹ भला बताओ तो हमारी आशा, हमारा उल्लास या हमारा वह मुकूट जिस पर हमें इतना गर्व है, क्या है? क्या वह तुम्हीं नहीं हो। हमारे प्रभु यीशु के दुबारा आने पर जब हम उसके सामने उपस्थित होंगे ²⁰ तो वहाँ तुम हमारी महिमा और हमारे आनन्द होंगे।

3¹⁻² क्योंकि हम और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे इसलिए हमने एथेंस में अकेले ही ठहर जाने का निश्चय कर लिया। और हमने हमारे बन्धु तथा परमेश्वर के लिए मसीह के सुसमाचार के प्रचार में अपने सहकर्मी तिमथियुस को तुम्हें सुदृढ़ बनाने और विश्वास में उत्साहित करने को तुम्हारे पास भेज दिया ³ ताकि इन वर्तमान यातनाओं से कोई विचलित न हो उठे। क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि हम तो यातना के लिए ही निश्चित किए गये हैं। ⁴ वास्तव में जब हम तुम्हारे पास थे, तुम्हें पहले से ही कहा करते थे कि हम पर कष्ट आने वाले हैं, और यह ठीक वैसे ही हुआ भी है। तुम तो यह जानते ही हो। ⁵ इसलिए

know about your faith. I sent him when I could not wait anymore. I was afraid that the devil who tempts people might have defeated you with temptations. Then our hard work would have been wasted.

⁶ But now Timothy has come back from his visit with you and told us good news about your faith and love. He told us that you always remember us in a good way. He told us that you want very much to see us again. And it is the same with us—we want very much to see you. ⁷ So, brothers and sisters, we are encouraged about you because of your faith. We have much trouble and suffering, but still we are encouraged. ⁸ Our life is really full if you stand strong in the Lord. ⁹ We have so much joy before our God because of you! So we thank God for you. But we cannot thank him enough for all the joy we feel. ¹⁰ Night and day we continue praying with all our heart that we can come there and see you again. We want to give you everything you need to make your faith strong.

¹¹ We pray that our God and Father and our Lord Jesus will prepare the way for us to come to you. ¹² We pray that the Lord will make your love grow. We pray that he will give you more and more love for each other and for all people. We pray that you will love everyone in the same way we love you. ¹³ This will strengthen your desire to do what is right, and you will be holy and without fault before our God and Father when our Lord Jesus comes with all his holy people.

A Life That Pleases God

4 Brothers and sisters, now I have some other things to tell you. We taught you how to live in a way that will please God. And you are living that way. Now we ask and encourage you in the Lord Jesus to live that way more and more. ² You know all that we told you to do by the authority of the Lord Jesus. ³ God wants you to be holy. He wants you to stay away from sexual sins. ⁴ God wants each one of you to learn to control your own body. Use your body in a way that is holy and that gives

क्योंकि मैं और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था, इसलिए मैंने तुम्हारे विश्वास के विषय में जानने तिमुथियुस को भेज दिया। क्योंकि मुझे डर था कि लुभाने वाले ने कहीं तुम्हें प्रलोभित करके हमारे कठिन परिश्रम को व्यर्थ तो नहीं कर दिया है।

⁶ तुम्हारे पास से तिमुथियुस अभी-अभी हमारे पास वापस लौटा है और उसने हमें तुम्हारे विश्वास और तुम्हारे प्रेम का शुभ समाचार दिया है। उसने हमें बताया है कि तुम्हें हमारी मधुर याद आती है और तुम हमसे मिलने को बहुत अधीर हो। वैसे ही जैसे हम तुमसे मिलने को। ⁷ इसलिए हे भाईयों, हमारी सभी पीड़ाओं और यातनाओं में तुम्हारे विश्वास के कारण हमारा उत्साह बहुत बढ़ा है। ⁸ हाँ! अब हम फिर साँस ले पा रहे हैं क्योंकि हम जान गए हैं कि प्रभु में तुम अटल खड़े हो। ⁹ तुम्हारे विषय में तुम्हारे कारण जो आनन्द हमें मिला है, उसके लिए हम परमेश्वर का धन्यवाद कैसे करें। अपने परमेश्वर के सामने ¹⁰ रात-दिन यथासम्भव लगन से हम प्रार्थना करते रहते हैं कि किसी प्रकार तुम्हारा मुँह फिर देख पायें और तुम्हारे विश्वास में जो कुछ कमी रह गयी है, उसे पूरा करें।

¹¹ हमारा परम पिता परमेश्वर और हमारा प्रभु यीशु तुम्हारे पास आने को हमें मार्ग दिखाये। ¹² और प्रभु एक दूसरे के प्रति तथा सभी के लिए तुममें जो प्रेम है, उसकी बढ़ोतरी करे। वैसे ही जैसे तुम्हारे लिए हमारा प्रेम उमड़ पड़ता है। ¹³ इस प्रकार वह तुम्हारे हृदयों को सुदृढ़ करे और उन्हें हमारे परम पिता परमेश्वर के सामने हमारे प्रभु यीशु के आगमन पर अपने सभी पवित्र स्वर्गदूतों के साथ पवित्र एवं दोष-रहित बना दे।

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन

4 हे भाईयों, अब मुझे तुम्हें कुछ और बातें बतानी हैं। यीशु मसीह के नाम पर हम तुमसे प्रार्थना एवं निवेदन करते हैं कि तुमने हमसे जिस प्रकार उपदेश ग्रहण किया है, तुम्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए उसी के अनुसार चलना चाहिए। निश्चय ही तुम उसी प्रकार चल भी रहे हो। किन्तु तुम वैसे ही और अधिक से अधिक करते चलो। ² क्योंकि तुम यह जानते हो कि प्रभु यीशु के अधिकार से हमने तुम्हें क्या निर्देश दिए हैं। ³ और परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम उससे पवित्र हो जाओ, व्यभिचारों से दूर रहो, ⁴ अपने

honor to God.* ⁵ Don't let your sexual desires control you like the people who don't know God. ⁶ Never wrong any of your fellow believers or cheat them in this way. The Lord will punish those who do that. We have already told you this and warned you about it. ⁷ God chose us to be holy. He does not want us to live in sin. ⁸ So anyone who refuses to obey this teaching is refusing to obey God, not us. And God is the one who gives you his Holy Spirit.

⁹ We don't need to write to you about having love for your brothers and sisters in Christ. God has already taught you to love each other. ¹⁰ In fact, you love all the believers in Macedonia. We encourage you now, brothers and sisters, to show your love more and more.

¹¹ Do all you can to live a peaceful life. Mind your own business, and earn your own living, as we told you before. ¹² If you do these things, then those who are not believers will respect the way you live. And you will not have to depend on others for what you need.

The Lord's Coming

¹³ Brothers and sisters, we want you to know about those who have died. We don't want you to be sad like other people—those who have no hope. ¹⁴ We believe that Jesus died, but we also believe that he rose again. So we believe that God will raise to life through Jesus any who have died and bring them together with him when he comes.

¹⁵ What we tell you now is the Lord's own message. Those of us who are still living when the Lord comes again will join him, but not before

शरीर की वासनाओ पर नियन्त्रण रखना सीखो- ऐसे ढंग से जो पवित्र है और आदरणीय भी।* ⁵न कि उस वासनापूर्ण भावना से जो परमेश्वर को नहीं जानने वाले अधर्मियों की जैसी है। ⁶यह भी परमेश्वर की इच्छा है कि इस विषय में कोई अपने भाई के प्रति कोई अपराध न करे या कोई अनुचित लाभ न उठाये, क्योंकि ऐसे सभी पापों के लिए प्रभु दण्ड देगा जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं और तुम्हें सावधान भी कर चुके हैं। ⁷परमेश्वर ने हमें अपवित्र बनने के लिए नहीं बुलाया है बल्कि पवित्र बनने के लिए बुलाया है। ⁸इसलिए जो इस शिक्षा को नकारता है वह किसी मनुष्य को नहीं नकार रहा है बल्कि परमेश्वर को ही नकार रहा है। उस परमेश्वर को जो तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा भी प्रदान करता है।

⁹अब तुम्हें तुम्हारे भाई बहनों के प्रेम के विषय में भी लिखा जाये, इसकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं तुमको एक दूसरे के प्रति प्रेम करने की शिक्षा दी है। ¹⁰और वास्तव में तुम अपने सभी भाईयों के साथ समूचे मकिदुनिया में ऐसा ही कर भी रहे हो। किन्तु भाइयों! हम तुमसे ऐसा ही अधिक से अधिक करने को कहते हैं।

¹¹शांतिपूर्वक जीने को आदर की वस्तु समझो। अपने काम से काम रखो। स्वयं अपने हाथों से काम करो। जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं। ¹²इससे कलीसिया से बाहर के लोग तुम्हारे जीने के ढंग का आदर करेंगे। इससे तुम्हें किसी भी दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

प्रभु का लौटना

¹³हे भाईयों, हम चाहते हैं कोई जो चिर-निद्रा में सो गए हैं, तुम उनके विषय में भी जानो ताकि तुम्हें उन औरों के समान, जिनके पास आशा नहीं है, शोक न करना पड़े। ¹⁴क्योंकि यदि हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु की मृत्यु हो गयी और वह फिर से जी उठा, तो उसी प्रकार जिन्होंने उसमें विश्वास करते हुए प्राण त्याग दिए हैं, उनके साथ भी परमेश्वर वैसा ही करेगा। और यीशु के साथ वापस ले जायेगा।

¹⁵जब प्रभु का फिर से आगमन होगा तो हम जो जीवित हैं और अभी यहीं हैं उनसे आगे नहीं

4:4 Or "God wants each of you to learn to live with your wife in a way that is holy and that gives honor to God."

4:4 इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: अपनी ही पत्नी के साथ कैसे रहा जाता है।

those who have already died. ¹⁶The Lord himself will come down from heaven with a loud command, with the voice of the archangel, and with the trumpet call of God. And the people who have died and were in Christ will rise first. ¹⁷After that, we who are still alive at that time will be gathered up with those who have died. We will be taken up in the clouds and meet the Lord in the air. And we will be with the Lord forever. ¹⁸So encourage each other with these words.

Be Ready for the Lord's Coming

5 Now, brothers and sisters, we don't need to write to you about times and dates. ²You know very well that the day when the Lord comes again will be a surprise, like a thief who comes at night. ³People will say, "We have peace and we are safe." At that time destruction will come to them quickly, like the pains of a woman giving birth. And those people will not escape.

⁴But you, brothers and sisters, are not living in darkness. And so that day will not surprise you like a thief. ⁵You are all people who belong to the light. You belong to the day. We don't belong to the night or to darkness. ⁶So we should not be like other people. We should not be sleeping. We should be awake and have self-control. ⁷People who sleep, sleep at night. People who drink too much, drink at night. ⁸But we belong to the day, so we should control ourselves. We should wear faith and love to protect us. And the hope of salvation should be our helmet.

⁹God did not choose us to suffer his anger. God chose us to have salvation through our Lord Jesus Christ. ¹⁰Jesus died for us so that we can live together with him. It is not important if we are alive or dead when Jesus comes. ¹¹So encourage each other and help each other grow stronger in faith, just as you are already doing.

Final Instructions and Greetings

¹²Now brothers and sisters, we ask you to recognize the value of those who work hard

निकल पाएँगे जो मर चुके हैं। ¹⁶क्योंकि स्वर्गदूतों का मुखिया जब अपने ऊँचे स्वर से आदेश देगा तथा जब परमेश्वर का बिगुल बजेगा तो प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेगा। उस समय जिन्होंने मसीह में प्राण त्यागे हैं, वे पहले उठेंगे। ¹⁷उसके बाद हमें जो जीवित हैं, और अभी भी यहीं है उनके साथ ही हवा में प्रभु से मिलने के लिए बादलों के बीच ऊपर उठा लिए जायेंगे और इस प्रकार हम सदा के लिए प्रभु के साथ हो जायेंगे। ¹⁸अतः इन शब्दों के साथ एक दूसरे को उत्साहित करते रहो।

प्रभु के स्वागत को तैयार रहो

5 हे भाईयों, समयों और तिथियों के विषय में तुम्हें लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है ²क्योंकि तुम स्वयं बहुत अच्छी तरह जानते हो कि जैसे चोर रात में चुपके से चला आता है, वैसे ही प्रभु के फिर से लौटने का दिन भी आ जायेगा। ³जब लोग कह रहे होंगे कि "सब कुछ शांत और सुरक्षित है" तभी जैसे एक गर्भवती स्त्री को अचानक प्रसव वेदना आ घेरती है वैसे ही उन पर विनाश उतर आयेगा और वे कहीं बच कर भाग नहीं पायेंगे। ⁴किन्तु हे भाईयों, तुम अन्धकार के वासी नहीं हो कि तुम पर वह दिन चुपके से चोर की तरह आ जाये। ⁵तुम सब तो प्रकाश के पुत्र हो और दिन की संतान हो। हम न तो रात्रि से सम्बन्धित हैं और न ही अन्धरे से। ⁶इसलिए हमें औरों की तरह सोते नहीं रहना चाहिए, बल्कि सावधानी के साथ हमें तो अपने पर नियन्त्रण रखना चाहिए। ⁷क्योंकि जो सोते हैं, रात में सोते हैं और जो नशा करते हैं, वे भी रात में ही मदमस्त होते हैं। ⁸किन्तु हम तो दिन से सम्बन्धित हैं इसलिए हमें अपने पर काबू रखना चाहिए। आओ विश्वास और प्रेम की झिलम धारण कर लें और उद्धार पाने की आशा को शिरस्त्राण की तरह ओढ़ लें।

⁹क्योंकि परमेश्वर ने हमें उसके प्रकोप के लिए नहीं, बल्कि हमारे प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिए बनाया है। ¹⁰यीशु मसीह ने हमारे लिए प्राण त्याग दिए ताकि चाहे हम सजीव हैं चाहे मृत, जब वह पुनः आए उसके साथ जीवित रहें। ¹¹इसलिए एक दूसरे को सुख पहुँचाओ और एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाते रहो। जैसा कि तुम कर भी रहे हो।

अंतिम निर्देश और अभिवादन

¹²हे भाईयों, हमारा तुमसे निवेदन है कि जो लोग तुम्हारे बीच परिश्रम कर रहे हैं और प्रभु में

among you—those who, as followers of the Lord, care for you and tell you how to live. ¹³Show them the highest respect and love because of the work they do.

Live in peace with each other. ¹⁴We ask you, brothers and sisters, to warn those who will not work. Encourage those who are afraid. Help those who are weak. Be patient with everyone. ¹⁵Be sure that no one pays back wrong for wrong. But always try to do what is good for each other and for all people.

¹⁶Always be full of joy. ¹⁷Never stop praying. ¹⁸Whatever happens, always be thankful. This is how God wants you to live in Christ Jesus.

¹⁹Don't stop the work of the Holy Spirit. ²⁰Don't treat prophecy like something that is not important. ²¹But test everything. Keep what is good, ²²and stay away from everything that is evil.

²³We pray that God himself, the God of peace, will make you pure—belonging only to him. We pray that your whole self—spirit, soul, and body—will be kept safe and be blameless when our Lord Jesus Christ comes. ²⁴The one who chose you will do that for you. You can trust him.

²⁵Brothers and sisters, please pray for us. ²⁶Give all the brothers and sisters the special greeting of God's people. ²⁷I tell you by the authority of the Lord to read this letter to all the believers there. ²⁸The grace of our Lord Jesus Christ be with you.

जो तुम्हें राह दिखाते हैं, उनका आदर करते रहो। ¹³हमारा तुमसे निवेदन है कि उनके काम के कारण प्रेम के साथ उन्हें पूरा आदर देते रहो।

परस्पर शांति से रहो। ¹⁴हे भाईयों, हमारा तुमसे निवेदन है आलसियों को चेताओ, डरपोकों को प्रोत्साहित करो, दोनों की सहायता में रुचि लो, सब के साथ धीरज रखो। ¹⁵देखते रहो कोई बुराई का बदला बुराई से न दे, बल्कि सब लोग सदा एक दूसरे के साथ भलाई करने का ही जतन करें।

¹⁶सदा प्रसन्न रहो। ¹⁷प्रार्थना करना कभी न छोड़ो। ¹⁸हर परिस्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद करो।

¹⁹पवित्र आत्मा के कार्य का दमन मत करते रहो। ²⁰नबियों के संदेशों को कभी छोटा मत जानो। ²¹हर बात की असलियत को परखो, जो उत्तम है, उसे ग्रहण किए रहो ²²और हर प्रकार की बुराई से बचे रहो।

²³शांति का स्रोत परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह पवित्र करे। पूरी तरह उसको समर्पित हो जाओ और तुम अपने सम्पूर्ण अस्तित्व अर्थात् आत्मा, प्राण और देह को हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूर्णतः दोष रहित बनाए रखो। ²⁴वह परमेश्वर जिसने तुम्हें बुलाया है, विश्वास के योग्य है। निश्चयपूर्वक वह ऐसा ही करेगा।

²⁵हे भाईयों, हमारे लिए भी प्रार्थना करो। ²⁶सब भाईयों का पवित्र चुम्बन से सत्कार करो। ²⁷तुम्हें प्रभु की शपथ देकर मैं यह आग्रह करता हूँ कि इस पत्र को सब भाईयों को पढ़ कर सुनाया जाए। ²⁸हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।